Exchange & Finance Available
Zelo Electric Scooter
Maa Bhagwati Services & Enterprises
B. No. 23, Infront of IDBI Bank,
Neemuch 9407423966, 8770664866

मालवा फर्स्ट

MALWA FIRST

स्वाभिमान ही हमारा अभिमान है

Periodicity- Weekly

PRGI Reg. No. MPHIN/2023/90883

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

03 जून 2026

वर्ष - 04, अंक - 05 - मूल्य 02 रूपए

पृष्ठ - 04

E-mail: nmh.pawan@gmail.com

Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity: Gold 1,51,905 Silver 2,95,000 Crude Oil 5,963 Natural Gas 302.20 Aluminium 232.30 Copper 827.35

एमपी में भर्ती परीक्षाओं में बड़ा बदलाव : अब 25% सवाल होंगे 'मध्य प्रदेश' से, 15 की जगह सिर्फ 3 पात्रता टेस्ट

भोपाल। मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मंडल (ईएसबी) ने भर्ती परीक्षाओं के पैटर्न में बदलाव करने की तैयारी की है। इसके लिए कनिष्ठ सेवा संयुक्त परीक्षा नियम-2026 का मसौदा तैयार किया गया है। इसमें तय किया है कि 100 अंकों की परीक्षा में से 25 प्रश्न मध्य प्रदेश संदर्भित, राजव्यवस्था और शासकीय योजनाओं से संबंधित पूछे जाएंगे। जबकि गणित और रीजनिंग विषयों के प्रश्नों की संख्या पहले की तुलना में कम कर दी जाएगी।

यह परीक्षा पैटर्न युवाओं को ध्यान में रखते हुए संशोधित किया गया है। कुल मिलाकर विभिन्न भर्ती परीक्षाओं में मध्य प्रदेश का सामान्य ज्ञान बढ़ाया जाएगा। बता दें कि पहले भर्ती परीक्षाओं में मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान से केवल 10 प्रश्न पूछे जाते थे, लेकिन अब इनकी संख्या बढ़ाकर 25 कर दी गई है। विशेषज्ञों का मानना है कि राज्य से जुड़े विषयों की बेहतर समझ रखने वाले युवाओं को अधिक अवसर मिल सकेंगे।

तकनीकी व इंजीनियरिंग परीक्षाओं का पैटर्न भी बदला - ईएसबी ने तकनीकी और इंजीनियरिंग पदों की भर्ती परीक्षाओं के स्वरूप में भी बदलाव किया है। अब इन परीक्षाओं में भी मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान, कंप्यूटर ज्ञान, तार्किक योग्यता तथा संबंधित तकनीकी विषयों के प्रश्न पूछे जाएंगे। यहां भी गणित और रीजनिंग के प्रश्नों का अनुपात कम किया गया है।

15 की जगह होंगी तीन पात्रता परीक्षाएं - नए नियमों के तहत ईएसबी द्वारा आयोजित की जाने वाली लगभग 15 अलग-अलग भर्ती परीक्षाओं के स्थान पर अब केवल तीन पात्रता परीक्षाएं आयोजित की जाएंगी। इन परीक्षाओं में प्राप्त स्कोर के आधार पर विभिन्न विभागों में भर्ती प्रक्रिया पूरी होगी। शासन ने नियमों के मसौदे पर आम नागरिकों और अभ्यर्थियों से पांच जून तक सुझाव और आपत्तियां आमंत्रित किए हैं। प्रस्तावित नियम एक अक्टूबर 2026 से लागू होंगे और वर्ष 2013 के पुराने नियमों का स्थान लेंगे।

ये होंगी तीन नई पात्रता परीक्षाएं - संयुक्त सामान्य पात्रता परीक्षा में 100 प्रश्न होंगे, जिन्हें चार बराबर भागों में विभाजित किया जाएगा। इसमें सामान्य ज्ञान एवं समसामयिक घटनाएं, मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान, राजव्यवस्था एवं शासकीय योजनाएं, गणित, तार्किक योग्यता, डाटा विश्लेषण, कंप्यूटर ज्ञान और भाषा ज्ञान से जुड़े प्रश्न शामिल होंगे।

संयुक्त तकनीकी पात्रता परीक्षा में 25 प्रश्न मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान, राजव्यवस्था और सरकारी योजनाओं से होंगे, जबकि 75 प्रश्न संबंधित तकनीकी विषयों से पूछे जाएंगे। इसमें कृषि, विज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, सिविल इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रानिक्स सहित 15 विषय शामिल किए हैं।

शिक्षक पात्रता परीक्षा स्कूल शिक्षा विभाग में शिक्षकों की भर्ती के लिए आयोजित की जाएगी।

स्कोर कार्ड रहेगा भर्ती का आधार - ईएसबी इन परीक्षाओं के परिणाम परसेंटाइल स्कोर के रूप में घोषित करेगा। निर्धारित न्यूनतम अंक प्राप्त करने वाले अभ्यर्थियों को स्कोर कार्ड जारी किया जाएगा। सामान्य और तकनीकी पात्रता परीक्षाओं का स्कोर कार्ड परिणाम घोषित होने वाले वर्ष से अगले दो वर्षों की 31 दिसंबर तक यानी लगभग ढाई वर्ष तक मान्य रहेगा। वहीं शिक्षक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले अभ्यर्थियों की पात्रता आजीवन बनी रहेगी, लेकिन विभागीय भर्ती में उनका स्कोर कार्ड भी केवल ढाई वर्ष तक ही मान्य होगा।

नीमच गौरव दिवस आज, स्वच्छता और देशभक्ति से सजेगा पूरा शहर

नीमच, 01 जून। नगर पालिका परिषद नीमच द्वारा प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी 3 जून को नीमच गौरव दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर स्वच्छता एवं देशभक्ति से ओतप्रोत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्रीमती दुर्गा बामनिया ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्ष 1857 की स्वतंत्रता संग्राम क्रांति में पहली गोली 3 जून को नीमच से चली थी। इसी ऐतिहासिक महत्व के कारण प्रत्येक वर्ष 3 जून को नीमच गौरव दिवस मनाया जाता है। कार्यक्रम के तहत प्रातः 8 बजे शहीद पार्क, नीमच सिटी में शहीदों को नमन करते हुए स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। इसके साथ ही शहर के शहीद स्मारकों, महापुरुषों की प्रतिमाओं एवं प्रमुख सर्किलों पर आकर्षक सजावट की जाएगी।

शाम 7 बजे श्री अटल सभागृह, टाउन हॉल में देशभक्ति आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होगा। इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय सांसद सुधीर गुप्ता, विधायक दिलीप सिंह परिहार, जिला पंचायत अध्यक्ष सज्जन सिंह चौहान, भाजपा पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष पवन पाटीदार, भाजपा जिला अध्यक्ष वंदना खंडेलवाल एवं जनपद अध्यक्ष शारदा बाई धनगर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर पालिका अध्यक्ष स्वाति गौरव चोपड़ा करेंगी। वहीं उपाध्यक्ष रंजना करण सिंह परमाल, सभापति नीरज अहीर, मनोहर मोटवानी, दारा सिंह यादव, कुसुम अशोक जोशी, धर्मेश पुरोहित, छाया जायसवाल सहित समस्त पार्षदगण विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्रीमती बामनिया ने समस्त जनप्रतिनिधियों, पत्रकारों एवं गणमान्य नागरिकों से कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने का अनुरोध किया है।

जीतू पटवारी ने 'टपोरी' कहे जाने को बताया मेडल: कहा- मुख्यमंत्री पहलवान हैं, उन्हें घृणा नहीं, धैर्य-दृढ़ता का प्रतीक होना चाहिए

नीमच । मंगलवार को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी एक दिन के प्रवास पर नीमच आए। यहां उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। मुख्यमंत्री मोहन यादव द्वारा टपोरी कहे जाने पर उन्होंने कहा कि उनके खिलाफ जो भी राजनीतिक दुर्भावना की कार्रवाई की जा रही है । जीतू पटवारी ने कहा कि दरअसल, विपक्ष की मजबूत भूमिका निभाने के बदले मिला एक 'मेडल' है। मुख्यमंत्री उन्हें ऐसे मेडल देते रहें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बचपन में पहलवान रहे हैं और कुश्ती संघ के अध्यक्ष भी रहे हैं, इसलिए एक अखाड़े के पहलवान की तरह उन्हें भी दृढ़ता, सब्र और धैर्य का प्रतीक होना चाहिए और ऐसी बातें नहीं बोलनी चाहिए जिससे पद की गरिमा धूमिल हो।

कांग्रेस का विचार घृणा का नहीं, बल्कि प्रेम और मोहब्बत का है, जिसके लिए राहुल गांधी ने 4000 किलोमीटर की पदयात्रा की है। यह ढाई साल भले ही मोहन यादव के हैं, लेकिन इसके बाद 5 लाख प्रतिशत मध्य प्रदेश में किसान के बेटों की और कांग्रेस की ही सरकार बनेगी।

इस दौरान उन्होंने केंद्र की मोदी सरकार और राज्य की मोहन यादव सरकार पर तीखे हमले किए। पटवारी ने देश में बढ़ती आर्थिक असमानता, पेपर लीक मामलों और सरकारी नीतियों पर गंभीर सवाल उठाए।

NEET - आरएसएस, भाजपा पर लगाए आरोप - पटवारी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर सीधा निशाना साधते हुए कहा कि उनके कार्यकाल में देश के विभिन्न राज्यों में 90 बार पेपर लीक हो चुके हैं। उन्होंने मध्य प्रदेश में 'व्यापम' जैसी धांधलियों का भी जिक्र किया, जिसके कारण 50 से अधिक परीक्षाएं रद्द करनी पड़ी थीं।

उन्होंने प्रधानमंत्री के उस बयान पर भी सवाल उठाया जिसमें उन्होंने पेपर के परिवहन के लिए सेना और हवाई जहाजों के इस्तेमाल की बात कही थी। पटवारी ने पूछा कि क्या विश्वगुरु बनने का दावा करने वाले देश में एक परीक्षा भी ठीक से नहीं कराई जा सकती। पेपर लीक और नौकरियों की धांधली के पीछे भाजपा और आरएसएस से जुड़े लोग पकड़े जाते हैं।

नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (NEET) कराने वाली संस्था का मुखिया आरएसएस से जुड़ा व्यक्ति बना हुआ है और इससे पहले जो जोशी था, वह भी आरएसएस का था।

एक असिस्टेंट प्रोफेसर को किस नियम से इतनी बड़ी परीक्षा का मुखिया बनाया गया, यह समझ से परे है। यह देश के उन मिडिल क्लास माता-पिता और युवाओं के साथ सीधा अपराध है जो अपने बच्चों को डॉक्टर बनाना चाहते हैं और यह अपराध खुद मोदी सरकार करवा रही है।

कार्यकर्ताओं और बड़े नेताओं को चेतावनी - पटवारी ने कांग्रेस संगठन को लेकर भी कड़ा रुख अपनाया। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं और बड़े नेताओं को चेतावनी दी कि अब पुरानी ढर्रे वाली कांग्रेस नहीं रही। उन्होंने स्पष्ट किया कि जो नेता केवल चुनाव के समय सक्रिय होते हैं, उन्हें सरकार बनने के बाद ही जगह मिलेगी।

उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति हर समय सक्रिय रहेगा, उसी का उपयोग संगठन और सरकार बनाने में किया जाएगा। पटवारी ने सख्त लहजे में कहा कि यदि कोई नेता पद पर आकर घर बैठकर जन्मदिन मनाएगा, पार्टी की बैठकों में नहीं जाएगा और जनता की समस्याओं के लिए नहीं लड़ेगा, तो उसे पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं है।

उन्होंने जोर देकर कहा कि भविष्य में चुनाव लड़ने के इच्छुक नेताओं को पूरे पांच साल जमीन पर सक्रिय रहना होगा। पटवारी ने चेतावनी दी कि आखिरी वक्त में सक्रिय होने वालों का सम्मान केवल सरकार बनने के बाद ही किया जाएगा।

एक महीने रतलाम में रहे चार चीनी नागरिक, जानकारी छिपाने पर होटल संचालक व मैनेजर पर केस, खुफिया जांच में खुला राज

इंदौर। मध्य प्रदेश के रतलाम में स्टेशन रोड थाना क्षेत्र स्थित होटल अजंता पैलेस में चीन के चार नागरिक करीब एक महीने ठहरे। वह चले गए, तब तक यह जानकारी होटल प्रबंधन ने ऑनलाइन प्लेटफार्म पर अपलोड नहीं की। मामला खुफिया एजेंसी के संज्ञान में आने पर होटल संचालक डॉ. सुभाष अग्रवाल और मैनेजर शिव सिंह राठौर पर अप्रवास एवं विदेशियों विषयक अधिनियम-2025 के तहत कार्रवाई की गई है।

दिसंबर-जनवरी के दौरान ठहरे - पुलिस के अनुसार जांच में सामने आया है कि दिसंबर 2025 और जनवरी 2026 के दौरान चार चीनी नागरिक होटल अजंता पैलेस में ठहरे थे। वे बिजनेस वीजा पर भारत आए थे और मशीनरी संबंधी कार्य के सिलसिले में रतलाम में रुके हुए थे। रिकॉर्ड के मुताबिक, जू हू 17 दिसंबर 2025 से 20 जनवरी 2026 तक, झी गुआंगजियान 30 दिसंबर 2025 से 20 जनवरी 2026 तक तथा यांग झोंगफू और लियू यान तीन जनवरी 2026 से 20 जनवरी 2026 तक होटल में ठहरे थे।

ट्रैवल हिस्ट्री खंगाली, तब पता चला - इसके बावजूद होटल प्रबंधन ने न तो संबंधित जानकारी सी-फॉर्म पोर्टल पर अपलोड की और न ही स्थानीय पुलिस अथवा एसपी कार्यालय को सूचित किया। सूत्रों के अनुसार चारों चीनी नागरिकों की ट्रेवल हिस्ट्री की जांच के दौरान उनके रतलाम प्रवास की जानकारी सामने आई थी। इसके बाद संबंधित खुफिया एजेंसी ने सी-फार्म पोर्टल का मिलान किया, लेकिन आवश्यक जानकारी उपलब्ध नहीं मिली। इस पर एजेंसी ने रतलाम पुलिस को अवगत कराया। किसी भी होटल, लाज, धर्मशाला, गेस्ट हाउस या निजी परिसर में विदेशी नागरिक के ठहरने पर उसकी सूचना देना अनिवार्य है। संचालक या प्रबंधक को विदेशी नागरिक के आगमन के 24 घंटे के भीतर आनलाइन सी-फार्म भरना होता है। यह जानकारी जिला प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियों के रिकार्ड में दर्ज होती है।

एमपी में यूसीसी लागू करने को लेकर सीएम मोहन यादव ने जारी किया वीडियो, लोगों से की अपील

भोपाल । मध्य प्रदेश में सामान नागरिक संहिता को लागू करने की कवायद तेज हो चुकी है। इसी कड़ी में सोमवार को प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने एक वीडियो जारी किया। उन्होंने इस वीडियो में कहा कि-'सरकार मध्यप्रदेश में समान नागरिक संहिता लागू करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। मैं प्रदेशवासियों से अपील करता हूंकि कमेटी को अपने सुझाव अवश्य दें।' कुछ हफ्ते पहले सीएम मोहन यादव ने एमपी यूसीसी की आधिकारिक वेबसाइट को लॉन्च किया था। इसमें राज्य के सभी लोगों से यूसीसी बिल को लेकर सुझाव मांगे थे। इसी को लेकर सीएम ने वीडियो जारी प्रदेशवासियों से अपील की है।

बहनों की शादियों के लिए पर्सनल लॉ मानने की जरुरत नहीं - सीएम मोहन यादव ने वीडियो में कहा कि हमारी बहनों की शादियों और पारिवारिक परंपराओं के बारे में धर्म के आधार पर अलग-अलग पर्सनल लॉ मानने की मौजूदा प्रथा अब जरूरी नहीं है। हमें राज्य में एक समान नागरिक संहिता (UCC) की जरूरत है। सीएम ने कहा कि उत्तराखंड, गुजरात और असम में UCC अपनाने से प्रेरित होकर मध्य प्रदेश सरकार इसे लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है।'

जनता वेबसाइट पर दें सुझाव - सीएम ने आगे कहा कि सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज के नेतृत्व में अलग-अलग विद्वानों वाली एक कमेटी बनाई गई है जो सभी जिलों में हर धर्म के लोगों से सुझाव इकट्ठा करेगी। इसका लक्ष्य इन सुझावों को इकट्ठा करना और मध्य प्रदेश में UCC को लागू करने में तेजी लाना है। उन्होंने कहा कि जनता के सुझाव इकट्ठा करने के लिए एक वेबसाइट लॉन्च की गई है जहां वह अपने सुझाव सरकार तक पहुंचा सकती है।'

सुप्रीम कोर्ट से रिटायर्ड जज रंजना प्रसाद देसाई कमेटी की अध्यक्ष - बता दें कि, 28 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट की रिटायर्ड जज रंजना प्रसाद देसाई की अध्यक्षता में कमेटी का गठन (UCC) किया गया है। इसके साथ ही इस कमेटी में पांच सदस्य सेवानिवृत्त आईएएस शत्रुघ्न सिंह, कानूनविद अनूप नायर, शिक्षाविद गोपाल शर्मा, सामाजिक कार्यकर्ता बुधपाल सिंह और सामान्य प्रशासन विभाग के अपर सचिव अजय कटेसरिया को शामिल किया गया है। यह 6 सदस्यीय कमेटी 60 दिनों में अपनी रिपोर्ट सरकार के समक्ष पेश करेगी।

सीमेंट कंक्रीट कार्य ने बड़ाई लायंस पार्क चौक की सुंदरता

नपा अध्यक्ष श्रीमती चोपड़ा ने किया कार्य का निरीक्षण

नीमच। नगर पालिका परिषद नीमच की अध्यक्ष श्रीमती स्वाति गौरव चोपड़ा के मार्गदर्शन में शहर में जारी विकास श्रृंखला के तहत स्थानीय लायंस पार्क के पीछे चौक रोड के यहां 11 लाख की लागत से कराये जा रहे सीमेंट कंक्रीट कार्य ने वहां की सुंदरता को कई गुना बढ़ा दिया है। मंगलवार को नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती स्वाति गौरव चोपड़ा ने उक्त कार्य का निरीक्षण किया एवं जो भी कमियां दिखाई दी उन्हें दूर करने के निर्देश ठेकेदार एवं नगर पालिका इंजीनियर को दिए।

नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती चोपड़ा ने बताया कि लायन्स पार्क के यहां चौक पर चाट,पकौड़ी,पतासे एवं अन्य खानपान की वस्तुओं के ठेले लगते

हैं और यहां बड़ी संख्या में शहर के नागरिक परिवार सहित आते हैं, यह स्थान शहर के मुख्य मार्ग से जुड़ा है। बारिश में यहां जल भराव की समस्या भी रहती है. उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए यहां 11 लाख की लागत से 40 मीटर लंबा व 15 मीटर चौड़ा सीमेंट कंक्रीट कार्य कराया गया है जिससे अब यह स्थान स्वच्छ व सुंदर नजर आने लगा है. श्रीमती चोपड़ा ने कहा कि हमारा उद्देश्य शहर को स्वच्छ व सुंदर बनाना है और इसके लिए नगर पालिका द्वारा शहर में सुंदर और चौड़ी सड़कों का निर्माण, बगीचों का कायाकल्प, शहर में सुंदर पेंटिंग सहित अनेक विकास कार्य कराये जा रहे है। शहर के नागरिकों से भी अनुरोध है कि वे शहर को सुंदर और स्वच्छ बनाने में नगर पालिका का सहयोग प्रदान करें तथा अपने घर व संस्थान का कचरा डस्टबिन में एकत्रित कर कचरा गाड़ी में ही डालें तथा होटल, हलवाई व खान पान की दुकानवाले सहित अन्य व्यवसायी अपने यहां डस्टबिन रखें तथा स्वयं के साथ साथ ग्राहकों को भी पॉलिथीन का उपयोग न करने तथा कचरा डस्टबिन में ही डालने हेतु प्रेरित करें । निरीक्षण के दौरान नगर पालिका उपाध्यक्ष प्रतिनिधि श्री गजवीर सिंह परमाल,नगर पालिका इंजीनियर श्री पार्थ पंचोली, श्री अर्जुन राठौर तथा ठेकेदार भी उपस्थित थे ।

महिला को टक्कर मारकर फरार हुआ चालक, स्विमिंग पूल परिसर में छिपाई गई पटवारी की कार पुलिस ने की जब्त, आरोपी की तलाश जारी

नीमच। शहर के व्यस्त फोर जीरो चौराहे पर शनिवार सुबह करीब 6 बजे हुई सड़क दुर्घटना के मामले में पुलिस को महत्वपूर्ण सफलता मिली है। बुजुर्ग महिला को टक्कर मारकर फरार हुए कार चालक की तलाश के बीच केंट पुलिस ने दुर्घटना में शामिल कार को नगर पालिका के स्विमिंग पूल परिसर से जब्त कर लिया है। हालांकि हादसे को अंजाम देने वाला चालक अब भी पुलिस की पकड़ से दूर है।

जानकारी के अनुसार अनीता पति विजय छाजेड़ रोजाना की तरह शनिवार सुबह स्कूटी से मंदिर दर्शन के लिए निकली थीं। फोरजीरो चौराहे से गुजरते समय तेज रफ्तार सेंट्रो कार ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही अनीता छाजेड़ स्कूटी समेत सड़क पर दूर जा गिरीं और गंभीर रूप से घायल हो गईं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार हादसे के बाद चालक वाहन रोकने के बजाय मौके से फरार हो गया।

घटना के बाद कैंट थाना पुलिस ने शहरभर के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली और तकनीकी जांच शुरू की। जांच के दौरान पुलिस दुर्घटना में शामिल सेंट्रो कार तक पहुंच गई। पुलिस ने कार को नगर पालिका के स्विमिंग पूल परिसर से लावारिस हालत में बरामद कर जब्त कर लिया। माना जा रहा है कि कार्रवाई से बचने के लिए वाहन को वहां छिपाकर रखा गया था। पुलिस जांच में सामने आया है कि जब्त सेंट्रो कार क्रमांक एमपी 44 सीए 2510 राजेन्द्र कुमार यादव के नाम पर पंजीकृत है। दुर्घटना को अंजाम देने वाली सेंट्रो कार पर मध्यप्रदेश शासन लिखा हुआ है। स्थानीय स्तर पर चर्चा है कि वाहन मालिक पटवारी है, हालांकि पुलिस ने अभी इस संबंध में आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। पुलिस वाहन के स्वामित्व, उपयोगकर्ता और हादसे के समय कार चला रहे व्यक्ति की भूमिका की बारीकी से जांच कर रही है।

हादसे में घायल अनीता छाजेड़ का उपचार जारी है। परिजनों के अनुसार उनके हाथ और कंधे में गंभीर चोटें आई हैं। घटना के बाद शहरवासियों में भी आक्रोश है और आरोपी चालक की जल्द गिरफ्तारी की मांग उठ रही है।

केंट थाना प्रभारी सौरभ शर्मा का कहना है कि वाहन जब्त कर लिया गया है तथा चालक की पहचान और गिरफ्तारी के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। वाहन से जुड़े दस्तावेजों, सीसीटीवी फुटेज और अन्य साक्ष्यों के आधार पर जांच आगे बढ़ाई जा रही है। पुलिस का दावा है कि जल्द ही फरार चालक को गिरफ्तार कर पूरे मामले का खुलासा किया जाएगा।

खुद को आइसोलेट करें, इबोला पर स्वास्थ्य मंत्रालय की एडवाइजरी

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने मंगलवार को इबोला प्रभावित देशों से आने वाले यात्रियों के लिए एहतियाती सलाह जारी की है। मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि भारत में अब तक इबोला का कोई भी एक्टिव मामला सामने नहीं आया है, लेकिन अफ्रीका के कुछ हिस्सों में बीमारी के लगातार फैलने के मद्देनजर निगरानी और तैयारियां मजबूत कर दी गई हैं।

सावधानी बरतने की अपील मंत्रालय ने उन सभी लोगों से अपील की है जिन्होंने पिछले 21 दिनों के भीतर किसी इबोला प्रभावित देश की यात्रा की है या वहां से गुजरे हैं।

यदि बुखार, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, उल्टी, दस्त या बिना किसी वजह से खून बहने जैसे लक्षण दिखें तो तुरंत खुद को आइसोलेट कर लें और स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों को सूचित करें।

इबोला के शुरूआती लक्षण - स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा, 'जल्द रिपोर्ट करने से जान बचाई जा सकती हैं और बीमारी के फैलने को रोका जा सकता है।' विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, इबोला के लक्षण अचानक शुरू हो सकते हैं। इनमें बुखार, थकान, बेचैनी, मांसपेशियों में दर्द, सिरदर्द और गले में खराश प्रमुख हैं। बाद में उल्टी, दस्त, पेट दर्द, चकत्ते और लीवर-किडनी संबंधी परेशानी हो सकती हैं। खून बहना आम लक्षण नहीं है और यह बीमारी के अंतिम चरण में दिख सकता है।

हेल्पलाइन नंबर जारी - मंत्रालय ने जनता से अपील की है कि इबोला से संबंधित किसी भी जानकारी या सहायता के लिए 24x7 हेल्थ हेल्पलाइन नंबर 1075 पर संपर्क करें।

राजनीति सनातन विरोध की बजाय आममुद्दों पर केंद्रित हो

ललित गर्ग

यह भी सत्य है कि अनेक विपक्षी दल स्वयं को सनातन विरोधी नहीं, बल्कि सामाजिक कुरीतियों, जातिवाद और भेदभाव के विरोधी बताते हैं। उनका तर्क है कि वे सामाजिक न्याय और संवैधानिक मूल्यों की बात करते हैं। यह दृष्टि लोकतंत्र में स्वीकार्य है, क्योंकि हर परंपरा में आत्मसमीक्षा और सुधार की आवश्यकता होती है।

भारतीय राजनीति के वर्तमान परिदृश्य में एक ऐसा विमर्श लगातार उभर रहा है, जिसने राजनीतिक बहस को विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक न्याय जैसे मूल प्रश्नों से हटाकर धार्मिक पहचान और आस्था के इर्द-गिर्द खड़ा कर दिया है। यह विमर्श है- सनातन समर्थन बनाम सनातन विरोध। आज देश में एक ओर सनातन संस्कृति को भारतीय जीवन का शाश्वत आधार मानने वाली शक्तियां हैं, तो दूसरी ओर कुछ राजनीतिक वक्तव्य और प्रवृत्तियां ऐसी दिखती हैं जिन्हें जनमानस सनातन विरोध के रूप में देखता है। प्रश्न यह नहीं कि किसी विचारधारा से सहमति या असहमति क्यों है, बल्कि प्रश्न यह है कि क्या राजनीति का केंद्र धर्म होना चाहिए या जनजीवन के वास्तविक मुद्दे? भारत का लोकतंत्र धर्मनिरपेक्ष संविधान पर आधारित है, जहां राज्य का कार्य किसी धर्म का पक्ष या विरोध नहीं, बल्कि सभी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है। राजनीतिक दलों का दायित्व भी यही होना चाहिए कि वे जनता की समस्याओं, विकास और राष्ट्रीय एकता को प्राथमिकता दें। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में धार्मिक विमर्श राजनीति का बड़ा केंद्र बन गया है।

सनातन केवल एक धार्मिक शब्द नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक चेतना, जीवन-दर्शन और मूल्य परंपरा का प्रतीक है। ह्वसत्यं वद, धर्मं चरह्व, ह्ववसुधैव कुटुम्बकम्ह्व, ह्वसर्वे भवन्तु सुखिनःह्व जैसे सूत्र इसी सनातन दृष्टि के अंग हैं। इसलिए जब कोई राजनीतिक वक्तव्य सनातन को लेकर अपमानजनक या आक्रामक भाषा का उपयोग करता है, तो उसका प्रभाव केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक स्तर पर भी पड़ता है। तमिलनाडु में द्रमुक नेता उदयनिधि स्टालिन द्वारा सनातन धर्म की तुलना बीमारी से करने वाला वक्तव्य इसी कारण व्यापक विवाद का कारण बना। विपक्ष के अनेक दलों ने उससे दूरी बनाने का प्रयास किया, क्योंकि यह स्पष्ट था कि भारत जैसे देश में करोड़ों लोगों की आस्था को आहत करने वाला कथन राजनीतिक रूप से भी असहज स्थिति उत्पन्न करेगा। यहां यह समझना आवश्यक है कि द्रविड़ आंदोलन की अपनी ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि रही है। उसका मूल संघर्ष सामाजिक विषमताओं और जातीय वर्चस्व के विरुद्ध था। लेकिन जब सामाजिक सुधार का विमर्श पूरे धर्म या संस्कृति के विरोध जैसा प्रतीत होने लगे, तब वह जनस्वीकृति खो देता है।

यह भी सत्य है कि अनेक विपक्षी दल स्वयं को सनातन विरोधी नहीं, बल्कि सामाजिक कुरीतियों, जातिवाद और भेदभाव के विरोधी बताते हैं। उनका तर्क है कि वे सामाजिक न्याय और संवैधानिक मूल्यों की बात करते हैं। यह दृष्टि लोकतंत्र में स्वीकार्य है, क्योंकि हर परंपरा में आत्मसमीक्षा और सुधार की आवश्यकता होती है। स्वयं भारतीय दर्शन में भी संवाद, बहस और आत्मचिंतन की परंपरा रही है। बुद्ध, महावीर, कबीर, नानक, दयानंद और गांधी-सभी ने समाज की विसंगतियों पर प्रश्न उठाए, लेकिन उन्होंने समाज को तोड़ने नहीं, सुधारने का मार्ग चुना। समस्या तब उत्पन्न होती है जब राजनीतिक भाषा संतुलन खो देती है। जब आलोचना सुधार की जगह अस्वीकार की भाषा बन जाती है, तब वह समाज में ध्रुवीकरण को जन्म देती है। भारत जैसे बहुलतावादी देश में यह प्रवृत्ति लोकतांत्रिक स्वास्थ्य के लिए उचित नहीं कही जा सकती।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले एक दशक में भारतीय राजनीति में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और हिंदुत्व का विमर्श अधिक प्रभावी होकर उभरा है। राम मंदिर निर्माण, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, महाकाल लोक, सांस्कृतिक धरोहरों के पुनरुत्थान जैसे विषयों ने एक बड़े वर्ग में सांस्कृतिक आत्मविश्वास को मजबूत किया है। इससे भारतीय जनता पार्टी को राजनीतिक लाभ भी मिला। दूसरी ओर विपक्षी दल इस बदलते राजनीतिक मानस को समझने में कई बार असहज दिखाई दिए। कहीं उन्होंने धर्मनिरपेक्षता और आस्था के बीच संतुलन बनाने में चूक की, तो कहीं उनके कुछ नेताओं के बयान उन्हें कठिन स्थिति में ले आए। उत्तर प्रदेश से लेकर पश्चिम बंगाल तक चुनावी राजनीति में यह देखा गया कि केवल जातीय समीकरण या पारंपरिक वोट बैंक अब पर्याप्त नहीं हैं। जनता सांस्कृतिक पहचान, विकास और राष्ट्रीय विमर्श को भी महत्व देने लगी है। ऐसे में यदि कोई दल हिंदू आस्था के प्रति असंवेदनशील दिखता है, तो उसका राजनीतिक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। लेकिन इस पूरे विमर्श का दूसरा पक्ष भी है। क्या राजनीति का उद्देश्य केवल धार्मिक पहचान के आधार पर समर्थन जुटाना होना चाहिए? क्या देश के सामने मौजूद बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि संकट, आर्थिक असमानता और सामाजिक विघटन जैसे प्रश्न पीछे छूट जाने चाहिए? यह चिंता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

भारतीय राजनीति में पिछले कुछ वर्षों के दौरान धर्म, विशेषकर सनातन और हिंदू आस्था को लेकर कांग्रेस, सपा, बसपा, तृणमूल कांग्रेस, द्रमूक आदि विपक्षी दलों एवं उनके कुछ नेताओं द्वारा दिए गए बयानों को व्यापक जनसमुदाय ने सनातन पर आक्षेप या हिंदू भावनाओं के प्रति असंवेदनशीलता के रूप में देखा, जिसके राजनीतिक प्रभाव भी दिखाई दिए। किंतु इस विषय को केवल ह्वहिंदू विरोधह्व बनाम ह्वराजनीतिक विरोधह्व के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। भारत एक लोकतांत्रिक और बहुलतावादी राष्ट्र है, जहां किसी भी राजनीतिक दल को सरकार, नीतियों या नेतृत्व का विरोध करने का अधिकार है, लेकिन यदि वह विरोध आस्था, संस्कृति और बहुसंख्यक समाज की भावनाओं से टकराता हुआ प्रतीत हो, तो उसका राजनीतिक मूल्य चुकाना पड़ सकता है। यही कारण है कि कई दलों के लिए यह धारणा चुनौती बनी कि वे सत्ता-विरोध की राजनीति करते-करते सांस्कृतिक और धार्मिक संवेदनाओं से दूर हो गए हैं। भारत में सनातन केवल धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन, परंपरा, संस्कृति, सहिष्णुता और सभ्यता का प्रतीक माना जाता है, इसलिए उसके प्रति असावधान भाषा या नकारात्मक संकेत जनमानस में प्रतिकूल प्रतिक्रिया उत्पन्न करते रहे हैं। दूसरी ओर लोकतंत्र की स्वस्थ परंपरा यह भी अपेक्षा करती है कि राजनीतिक विमर्श व्यक्तियों, नीतियों और शासन के मुद्दों पर केंद्रित रहे, न कि धार्मिक ध्रुवीकरण पर। राजनीतिक दलों के लिए यह आवश्यक है कि वे मतभेद रखें, आलोचना करें, लेकिन भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक संवेदनशीलता और आस्था के सम्मान का संतुलन बनाए रखें, क्योंकि जनता अंततः उसी नेतृत्व को स्वीकार करती है जो उसकी भावनाओं, परंपराओं और राष्ट्रीय मानस को समझने का प्रयास करता है।

भारत की राजनीति को ह्वधर्म बनाम धर्महह्व की लड़ाई से ऊपर उठकर ह्वजन बनाम जनसमस्याह्व के विमर्श की ओर बढ़ना होगा। राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि जनता मंदिर भी चाहती है और रोजगार भी, आस्था भी चाहती है और अवसर भी, संस्कृति भी चाहती है और आधुनिकता भी। केवल धार्मिक ध्रुवीकरण किसी राष्ट्र की स्थायी प्रगति का आधार नहीं बन सकता। आज आवश्यकता है कि राजनीतिक दल सनातन विरोध या हिंदू विरोध जैसे आरोप-प्रत्यारोपों की राजनीति से बाहर निकलें। यदि किसी परंपरा में सुधार की बात करनी है, तो वह सम्मानजनक भाषा और रचनात्मक दृष्टि से हो। सामाजिक न्याय का अर्थ सांस्कृतिक अस्वीकार नहीं होना चाहिए और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अर्थ अन्य दृष्टियों का निषेध भी नहीं होना चाहिए। भारतीय सभ्यता की शक्ति उसकी विविधता और सहिष्णुता रही है। यहां शंकराचार्य भी हैं, बुद्ध भी हैं, महावीर भी हैं, कबीर भी हैं, वेद भी हैं और संविधान भी। भारत ने सदैव संवाद को संघर्ष से ऊपर रखा है। इसलिए राजनीति का भी दायित्व है कि वह समाज को जोड़ने वाली भाषा बोले। आज जब विश्व संघर्षों, सांस्कृतिक तनावों और पहचान की राजनीति से जूझ रहा है, तब भारत के पास ह्ववसुधैव कुटुम्बकम्ह्व का संदेश है। यही सनातन का वास्तविक स्वरूप भी है-समावेश, करुणा और सहअस्तित्व।

राजनीतिक दलों को आत्ममंथन करना होगा कि वे जनता को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं-धार्मिक टकराव की ओर या राष्ट्रीय निर्माण की ओर? यदि राजनीति केवल आस्था के विवादों में उलझी रही, तो जनजीवन के वास्तविक प्रश्न पीछे छूट जाएंगे। लेकिन यदि राजनीति संस्कृति का सम्मान करते हुए विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक समरसता को केंद्र बनाएगी, तो भारत एक संतुलित और सशक्त राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ेगा। सनातन का अर्थ शाश्वत है, और शाश्वत वही होता है जो सबको साथ लेकर चले। इसलिए किसी भी प्रकार का अंध-विरोध या अंध-समर्थन समाधान नहीं हो सकता। आवश्यकता है विवेकपूर्ण दृष्टि, संतुलित राजनीति और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने की। भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता इसी में है कि वह आस्था का सम्मान करे, लेकिन राजनीति को जनहित का माध्यम बनाए। तभी लोकतंत्र भी मजबूत होगा और समाज भी समरस बनेगा।

संपादकीय

लू से हलकान जिंदगी

हाल के दिनों में आसमान से बरसती आग से देश में जन-जीवन बुरी तरह झुलस रहा है। रोज तापमान बढ़ने के नये रिकॉर्ड सामने आ रहे हैं। ये असहनीय तापमान केवल स्वास्थ्य की चुनौती मात्र नहीं है, बल्कि एक आर्थिक संकट भी है। देश में असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिक भीषण गर्मी में काम करने को मजबूर हैं। यदि वे ऐसा न करें तो उनके सामने आजीविका का संकट पैदा हो जाता है। स्कूल-कालेज तो लू के दौरान बंद किए जा सकते हैं, सरकारी व गैर सरकारी दफ्तरों में काम के घंटों में बदलाव किया जा सकता है, लेकिन खेत में काम करने वाले खेतिहर मजदूर व निर्माण कार्य में लगे श्रमिकों को तो तपती दोपहरी व लू के बीच काम करने को मजबूर होना पड़ता है। दरअसल, लू की मार जहां शारीरिक है, वहीं आर्थिक भी। लगातार बढ़ते तापमान से लोगों की आजीविका और श्रम उत्पादकता पर बुरा असर पड़ रहा है। इस संकट को हाल के दिनों में हुई ईंधन की कीमतों की वृद्धि और महंगाई ने और बढ़ा दिया है। लोगों को सीमित संसाधनों में जीवन यापन को मजबूर होना पड़ रहा है। विडंबना यह है कि इस संकट का सबसे घातक प्रभाव उस तबके को सहन करना पड़ता है जो ह्वरोज कुंआ खोदकर पानी पीनेह्व को बाध्य है। एक दिन की कमाई से ही रात को उसके घर का चूल्हा जलता है। लू के निशाने पर वे अनौपचारिक श्रमिक हैं जो भारतीय आर्थिकी की रीढ़ हैं। सही मायनों में लू के खिलाफ लड़ाई को अब केवल एक मौसमी सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या ही नहीं माना जा सकता है। धीरे-धीरे यह एक गंभीर आर्थिक चुनौती भी बनी है। अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठन इस बाबत चेताते रहे हैं। वर्ष 2024 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने अनुमान लगाया था कि लू से उपजे हालात से भारत को सौ अरब डॉलर का नुकसान हुआ था। इससे पहले वर्ष 2022 में विश्व बैंक ने चेतावनी दी थी कि भारत का तीन-चौथाई श्रमिक वर्ग लू से प्रभावित क्षेत्रों में काम करने को मजबूर है। अनुमान है कि लू के तनाव के कारण होने वाली विश्वव्यापी नौकरियों की कमी में भारत की हिस्सेदारी आधी हो सकती है। दरअसल, भारत में सबसे अधिक जोखिम वाले समूहों में निर्माण श्रमिक, खेतिहर श्रमिक, किसान, स्ट्रीट वेंडर और डिलीवरी एजेंट शामिल हैं। हालांकि, समय-समय पर केंद्र व राज्य सरकारों ने कार्य समय का पुनर्निधारण, छायादार विश्राम क्षेत्र बनाने, जलपान सुविधा, सुरक्षात्मक कपड़े और स्वास्थ्य निगरानी को लेकर एडवाइजरी जारी की है,लेकिन फिर भी संकट के दायरे को देखते हुए ये उपाय नाकाफी हैं। देखा जाए तो फिलहाल भारत में गर्मी के संकट से मुकाबले के लिये बनायी गई योजनाएं काफी हद तक अस्थायी रूप से राहत देने वाली हैं। वक्त की मांग है कि भीषण गर्मी वाले महीनों के लिये तत्काल व्यापक नीतिगत ढांचा तैयार किया जाए।

चिंतन-मनन

संकल्प और साहस

खेल की कक्षा शुरू हुई तो एक दुबली-पतली अपंग लड़की किसी तरह अपनी जगह से उठी। वह खेलों के प्रति जिज्ञासा प्रकट करते हुए शिक्षक से ओलिंपिक रेकॉर्ड्स के बारे में सवाल पूछने लगी। इस पर सभी छात्र हंस पड़े। शिक्षक ने भी व्यंग्य किया- तुम खेलों के बारे में जानकर क्या करोगी। अपने ऊपर कभी नजर डाली है? तुम तो ठीक से खड़ी भी नहीं हो सकती, फिर ओलिंपिक से तुम्हें क्या मतलब है? तुम्हें कौन सा खेलना है जो यह सब जानोगी। चुपचाप बैठकर सुनो।

रुआंसी लड़की कुछ कह न सकी। सारी क्लास उस पर हंसती रही। अगले दिन जब खेल पीरियड में उसे बाकी बच्चों से अलग बिठाया गया तो उसने कुछ सोचकर बैसाखियां संभालीं और दृढ़ निश्चय के साथ बोली-सर याद रखिएगा। अगर लगन सच्ची हो और इरादे बुलंद हों तो सब कुछ संभव है। आप देखना एक दिन यही लड़की हवा से बातें करके दिखाएगी। उसकी इस बात से भी ठहाका गूंज उठा। सबने इसे मजाक के रूप में लिया। लेकिन वह लड़की तेज चलने के अभ्यास में जुट गई। वह अच्छी और पौष्टिक खुराक लेने लगी, फिर वह कुछ दिनों में दौड़ने भी लगी। कुछ दिनों के बाद उसने छोटी-मोटी दौड़ में भाग लेना भी शुरू कर दिया। उसे दौड़ते देख लोग दांतों तले उंगली दबा लेते थे। फिर कई लोग उसकी मदद को आगे आए। सबने उसका उत्साह बढ़ाया। उसके हौसले बुलंद होने लगे। फिर उसने 1960 के ओलिंपिक में हिस्सा लिया और तीन स्वर्ण पदक जीतकर सबको हतप्रभ कर दिया। ओलिंपिक में इतिहास रचने वाली वह थी अमेरिकी धाविका विल्मा रुडोल्फ।

ब्याज पर कर्ज लेकर निर्माण सामग्री मंगवाई : लोगों ने पट्टे की जमीन पर चबूतरा बनाकर खंडित मूर्ति रखी, पीड़ित पत्नी-बच्चे के साथ कलेक्ट्रेट पहुंचा

नीमच में मंगलवार को हुई जनसुनवाई के दौरान कलेक्टर हिमांशु चंद्रा के सामने जमीन पर कब्जे और दबंगई से जुड़े कई गंभीर मामले आए। कलेक्टर ने कुल 112 आवेदकों की समस्याएं सुनकर उनके समाधान के निर्देश अधिकारियों को दिए।

जावद के वार्ड नंबर 6 निवासी बलराम तेली अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ कलेक्ट्रेट पहुंचे। उन्होंने बताया कि वह 6 साल से कच्चे मकान में रह रहे थे और 2023 में सरकार ने उन्हें इस जमीन का पट्टा दे दिया। पट्टा मिलने के बाद उनका प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत हुआ और पहली किस्त मिलते ही उन्होंने मकान बनाना शुरू किया।

आरोप है कि स्थानीय सांवरा बावरी, रूपलाल, कारू, प्रकाश, बंसीलाल, जीतू, पूरण और उनके साथियों ने मजदूरों को डराकर भगा दिया। मंगलवार सुबह आरोपियों ने बलराम की जमीन के बड़े हिस्से पर जबरन एक धार्मिक चबूतरा बनाकर खंडित मूर्ति रख दी, ताकि धर्म की आड़ में जमीन हड़पी जा सके। आरोपियों ने मकान ढहाने, घर में आग लगाने और झूठे केस में फंसाने की धमकी दी है। बलराम ने भारी ब्याज पर कर्ज लेकर निर्माण सामग्री मंगवाई है, जो काम रुकने से खराब हो रही है। पीड़ित परिवार ने पुलिस सुरक्षा में मकान बनाने की मांग की गई ।

तालाब पर कब्जे से गोवंश के सामने प्यास का संकट - नीमच तहसील की ग्राम पंचायत सेमली चंद्रावत में सरकारी तालाब पर रसूखदारों के कब्जे का मामला सामने आया है। हालात इतने खराब हैं कि खुद सरपंच और उनके पति को सरकारी जमीन बचाने के लिए कलेक्ट्रेट आना पड़ा।

सरपंच ने बताया कि तालाब की करीब 1 हेक्टेयर जमीन पर गणपत सिंह और लाखनसिंह ने खंभे गाड़ दिए हैं, जबकि 2 हेक्टेयर जमीन पर सुरेश बंसल ने अतिक्रमण कर लिया है।

इस कुल 3 हेक्टेयर कीमती जमीन पर ट्रैक्टर चलाकर मिट्टी भरी जा रही है। तालाब के पास ही गोशाला है। गर्मी के दिनों में बिजली गुल होने पर गायें इसी तालाब पर पानी पीने आती हैं, लेकिन अतिक्रमणकारियों द्वारा तार-झाली की फेंसिंग कर देने से गायों का रास्ता बंद हो गया है। सरपंच ने तुरंत फेंसिंग हटाने और शासकीय सीमांकन कराने की मांग की है।

एक्सीडेंट पीड़ित दिव्यांग को मिलेगी आर्थिक मदद - जनसुनवाई के दौरान डीकेन निवासी श्रवण कुमार भी पहुंचे। उन्होंने बताया कि एक ट्रैक्टर हादसे में वे दिव्यांग हो गए थे, जिसके बाद उन्होंने रोजगार के लिए मदद की गुहार लगाई।

कलेक्टर ने उन्हें रेडक्रॉस के जरिए आर्थिक सहायता दिलाने के निर्देश दिए। इनके अलावा रामपुरा की जयश्री, नयागांव के सत्तू धाकड़, राजु, खजुरिया के सूरजमल, कुकड़ेश्वर के रमेशचंद्र, और भरभड़िया की राधा प्रजापत सहित जिलेभर से आए कई लोगों ने अपनी समस्याओं के आवेदन सौंपे।

इस दौरान जिला पंचायत सीईओ अमन वैष्णव और एडीएम बी.एस. कलेश सहित कई अधिकारी मौजूद रहे।

डोडाचूरा तस्करी मामले में सप्लायर और खरीददार सहित दो फरार आरोपी गिरफ्तार

रतनगढ़ (नीमच)। मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए रतनगढ़ थाना पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के मामले में फरार दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। यह सफलता रतलाम रेंज डीआईजी निमिष अग्रवाल और नीमच एसपी राजेश व्यास के मार्गदर्शन में मिली। दरअसल, ३१ मई २०२६ को पुलिस ने आरोपी कमलेश गुर्जर को ४० किलोग्राम अवैध डोडाचूरा और एक हुंडई वेन्यू कार के साथ गिरफ्तार किया था। पूछताछ में कमलेश ने माल की सप्लाई और खरीद से जुड़े नेटवर्क का खुलासा किया। इसी आधार पर मुखबिर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने १ जून २०२६ को अवैध डोडाचूरा उपलब्ध कराने वाले आरोपी ईश्वर धाकड़ (निवासी काकरिया तलाई, नीमच) और माल प्राप्त करने वाले आरोपी लक्ष्मण भील (निवासी भीलवाड़ा, राजस्थान) को भी गिरफ्तार कर लिया।

अब पुलिस इन आरोपियों से तस्करी के अन्य स्रोतों और उनके मददगारों के संबंध में पूछताछ कर रही है। इस पूरी कार्रवाई में रतनगढ़ थाना प्रभारी निरीक्षक भूरालाल भाबर, उनकी टीम और सायबर सेल के प्रधान आरक्षक प्रदीप शिन्दे की मुख्य भूमिका रही।

अंकिता पंड्या को सामाजिक न्याय विभाग का अतिरिक्त प्रभार, रेडक्रास की जिम्मेदारी भी सौंपी

नीमच। जिला प्रशासन ने सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग तथा रेडक्रास के प्रभार में बदलाव किया है। कलेक्टर हिमांशु चंद्रा द्वारा जारी संशोधित आदेश के अनुसार अब यह अतिरिक्त जिम्मेदारी अंकिता पंड्या को सौंपी गई है। जानकारी के अनुसार पूर्व में यह प्रभार डिप्टी कलेक्टर पराग जैन को सौंपा गया था, लेकिन कार्यालयीन आदेश में आंशिक संशोधन करते हुए अब सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, जिला नीमच तथा रेडक्रास का कार्यभार अंकिता पंड्या को दिया गया है। वे अपने वर्तमान दायित्वों के साथ-साथ इन विभागों का अतिरिक्त प्रभार भी संभालेंगी। अंकिता पंड्या वर्तमान में जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग, नीमच के पद पर कार्यरत हैं। संशोधित आदेश के अनुसार वे आगामी आदेश तक सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग एवं रेडक्रास के कार्यों का संचालन करेंगी। कलेक्टर द्वारा जारी यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है। प्रशासनिक स्तर पर इसे विभागीय कार्यों के बेहतर समन्वय और संचालन की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

जिला कौशल विकास समिति की बैठक 3 जून को कलेक्टर की अध्यक्षता, अधिकारियों को उपस्थित रहने के निर्देश

नीमच। जिला कौशल विकास समिति की बैठक 3 जून 2026 को आयोजित की जाएगी। बैठक दोपहर 3 बजे से कलेक्टर हिमांशु चंद्रा की अध्यक्षता में संपन्न होगी। आईटीआई नीमच के प्राचार्य ने बताया कि बैठक में जिला कौशल विकास समिति के सभी सदस्यों एवं संबंधित विभागों के अधिकारियों को उपस्थित रहने के लिए कहा गया है। बैठक में विभिन्न विषयों पर चर्चा की जाएगी। प्राचार्य ने समिति के सभी सदस्यों एवं विभागीय अधिकारियों से निर्धारित समय पर बैठक में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

दिनदहाड़े घर में घुसे दबंग, महिलाओं-बच्चों को पीटा, CCTV में कैद वारदात, एफआईआर दर्ज

नीमच। सिटी थाना क्षेत्र के भाटखेड़ा गांव में घर में घुसकर एक परिवार पर जानलेवा हमला करने और महिलाओं से लूटपाट करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। घटना में कैंसर पीड़ित महिला सहित परिवार के कई सदस्य घायल हुए हैं। पुलिस ने मामले में दो नामजद आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पीड़ित ईश्वर सिंह राठौर के अनुसार रविवार दोपहर वे अपने परिवार के साथ घर में विश्राम कर रहे थे। इसी दौरान गांव के ही नारायण सिंह पिता लाल सिंह और लोकेंद्र सिंह पिता नारायण सिंह उनके घर के बाहर पहुंचे और गाली-गलौज करने लगे। शोर सुनकर घर की महिलाएं बाहर निकलीं तो दोनों आरोपियों ने जबरन गेट खोलकर घर में प्रवेश कर लिया। आरोप है कि घर में घुसते ही आरोपियों ने महिलाओं, बच्चों और अन्य परिजनों के साथ लाठी-डंडों से मारपीट शुरू कर दी। बीच-बचाव करने पहुंचे ईश्वर सिंह राठौर और उनके पुत्र को भी नहीं बख्शा गया। हमले में परिवार के कई सदस्य घायल हो गए। आरोपियों ने एक कैंसर पीड़ित महिला के साथ भी मारपीट की, जिससे वह जमीन पर गिर पड़ीं। घटना के दौरान घर में अफरा-तफरी मच गई। पीड़ित परिवार का आरोप है कि मारपीट के बाद आरोपी महिलाओं के गले से सोने की चेन और कानों के झुमके छीनकर फरार हो गए। वारदात के दौरान घर में लगे सीसीटीवी कैमरों में पूरी घटना कैद हो गई है, जो अब पुलिस जांच का महत्वपूर्ण आधार बनी हुई है। घटना की जानकारी मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। लोगों को आता देख आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए वहां से भाग निकले। इसके बाद घायल परिवार सिटी थाने पहुंचा और शिकायत दर्ज कराई। मामले की गंभीरता को देखते हुए सीएसपी किरण चौहान ने स्वयं प्रकरण की जानकारी ली और पुलिस टीम को मौके पर भेजकर जांच के निर्देश दिए। पुलिस ने पीड़ित परिवार के बयान और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर तीन आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में प्रकरण दर्ज कर लिया है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच जारी है तथा उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है। गांव में हुई इस घटना के बाद क्षेत्र में दहशत और आक्रोश का माहौल है।

स्पंदन राधा कृष्ण का

राधा का अर्थ है ...मोक्ष की प्राप्ति। रा का अर्थ है मोक्ष और ध का अर्थ है प्राप्ति। कृष्ण जब वृन्दावन से मथुरा गए, तब से उनके जीवन में एक पल भी विश्राम नही था। उन्होंने आतताइयों से प्रजा की रक्षा की, राजाओं को उनके लुटे हुए राज्य वापिस दिलवाए और सोलह हज़ार स्त्रियों को उनके स्त्रीत्व की गरिमा प्रदान की। उन्होंने अन्य कईं जनहित कार्यों में अपने जीवन का उत्सर्ग किया।

राधा का अर्थ है ...मोक्ष की प्राप्ति। रा का अर्थ है मोक्ष और ध का अर्थ है प्राप्ति। कृष्ण जब वृन्दावन से मथुरा गए, तब से उनके जीवन में एक पल भी विश्राम नही था। उन्होंने आतताइयों से प्रजा की रक्षा की, राजाओं को उनके लुटे हुए राज्य वापिस दिलवाए और सोलह हज़ार स्त्रियों को उनके स्त्रीत्व की गरिमा प्रदान की। उन्होंने अन्य कईं जनहित कार्यों में अपने जीवन का उत्सर्ग किया। श्रीकृष्ण ने किसी चमत्कार से लड़ाइयाँ नहीं जीती। बल्कि अपनी बुद्धि योग और ज्ञान के आधार पर जीवन को सार्थक किया। मनुष्य का जन्म लेकर, मानवता की...उसके अधिकारों की सदैव रक्षा की। वे जीवन भर चलते रहे, कभी भी स्थिर नही रहे। जहाँ उनकी पुकार हुई, वे सहायता जुटाते रहे। उधर जब से कृष्ण वृन्दावन से गए, गोपियाँ और राधा तो मानो अपना अस्तित्व ही खो चुकी थी। राधा ने कृष्ण के वियोग में अपनी सुधबुध ही खो दी। मानो उनके प्राण ही न हो केवल काया मात्र रह गई थी। राधा को वियोगिनी देख कर, कितने ही महान कवियों- लेखकों ने राधा के पक्ष में कान्हा को निर्मोही जैसी उपाधि दी। दे भी क्यूँ न ?

राधा का प्रेम ही ऐसा अलौकिक था...उसकी साक्षी थी यमुना जी की लहरें, वृन्दावन की वे कुंजन गलियाँ, वो कदम्ब का पेड़, वो गोधुली बेला जब श्याम गायें चरा कर वापिस आते थे, वो मुरली की स्वर लहरी जो सदैव वहाँ की हवाओं में विद्यमान रहती थी। राधा जो वनों में भटकती, कृष्ण कृष्ण पुकारती, अपने प्रेम को अमर बनाती, उसकी पुकार सुन कर भी, कृष्ण ने एक बार भी पलट कर पीछे नही देखा। ...तो क्यूँ न वो निर्मोही एवं कठोर हृदय कहलाए। राधा का प्रेम ही ऐसा अलौकिक था...उसकी साक्षी थी यमुना जी की लहरें, वृन्दावन की वे कुंजन गलियाँ, वो कदम्ब का पेड़, वो गोधुली बेला जब श्याम गायें चरा कर वापिस आते थे, वो मुरली की स्वर लहरी जो सदैव वहाँ की हवाओं में विद्यमान रहती थी ... किन्तु कृष्ण के हृदय का स्पंदन किसी ने नहीं सुना। स्वयं कृष्ण को कहाँ कभी समय मिला कि वो अपने हृदय की बात..मन की बात सुन सकें। या फिर क्या यह उनका अभिनय था ? जब अपने ही कुटुंब से व्यथित हो कर वे प्रभास -क्षेत्र में लेट कर चिंतन कर रहे थे तब जरा के छोडे तीर की चुभन महसूस हुई। तभी उन्होंने देहोत्सर्ग करते हुए, राधा शब्द का उच्चारण किया। जिसे जरा ने सुना और उद्धव को जो उसी समय वह पहुँचे..उन्हें सुनाया। उद्धव की आँखों से आँसू लगतार बहने लगे। सभी लोगों को कृष्ण का संदेश देने के बाद, जब उद्धव, राधा के पास पहुँचे, तो वे केवल इतना कह सके -

राधा, कान्हा तो सारे संसार के थे,
किन्तु राधा तो केवल कृष्ण के ह्रदय में थी

कष्टहरता जय हनुमान...

हनुमान बजरंगबली और महावीर के नामों से जाने जाने वाले पवनसुत सप्त चिरंजीवियों में से एक हैं। पद्म-पुराण के 56-6-7 वें श्लोक में उनका अन्य छः चिरंजीवियों के साथ नाम इस प्रकार आता है-

अश्वत्थामा बलिव्यासो हनुमानन्च विभीषण।
कृप परशुरामश्च सप्तैत चिरंजीविन ।

वस्तुतः रामभक्त, संकटमोचन, रामसेवक, रामदूत, केशरीनंदन, आंजनेय, अंजनीसुत, कपीश, कपिराज, पवनसुत और संकटमोचक के रूप में विख्यात हनुमान अपने भक्तों को व्याधियों व संकटों, वेदनाओं तथा परेशानियों से मुक्ति दिलाते हैं।

हनुमान भक्ति व पूजा का लाभ

हर व्यक्ति को जीवन में अनेक समस्याओं से गुजरना पड़ता है, ऐसे में हनुमानजी का स्मरण उसकी कष्टों से रक्षा करता है। जहाँ हनुमानजी का नाम मुश्किलों से बचाव करता है, वहीं वह मन से अनजाने भय को निकालकर शुभ व मंगल का पथ प्रशस्त करता है, विपत्तियों से मुक्ति दिलाता है।

वास्तव में, हनुमानजी रामभक्ति, सत्य मर्यादा, ब्रह्मचर्य, सदाचार व त्याग की चरम सीमा हैं। इसका सविस्तार वर्णन हमें सुंदरकांड में मिलता है। इसीलिए सुंदरकांड का पाठ करने से अनिष्ट, अमंगल तथा संकट की समाप्ति होती है, और नेष्ट का रास्ता खुलता है। सुंदरकांड का पाठ करने से हनुमानजी प्रसन्न होते हैं, तथा भक्त को सुपरिणाम प्रदान करते हैं।

कार्यसिद्धि के लिए भी सुंदरकांड का पाठ किया जाता है। परंतु इस हेतु पाठ अमावस्या की रात्रि से शुरू करके नियमित रूप से 45 दिन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त नवरात्रि के समय भी सुंदरकांड का पाठ करना उचित माना जाता है। एक ऐसी भी मान्यता है कि नौ ग्रहों को रावण की कैद से केशरीनंदन ने ही मुक्त कराया था। उस समय शनि ने हनुमानजी को वचन दिया था कि- हे हनुमान! जो कोई भी आपकी पूजा-अर्चना करेगा, मैं उसे नहीं सताऊँगा। साधक को मंगलवार व शनिवार की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है। यथार्थ तो यह है कि कलियुग में महावीर हनुमान का नाम सही अर्थों में संकटमोचन है।

माँ गंगा का प्राकट्य

शिव का हिमालय और गंगा से घनिष्ठ संबंध है और गंगा से उनके संबंध की कथा से लोकप्रिय चित्रांकन बड़ा समृद्ध हुआ है। हिंदुओं के लिए समस्त जल, चाहे वह सागर हो या नदी, झील या वर्षाजल, जीवन का प्रतीक है और उसकी प्रकृति दैवी मानी जाती है। इस संदर्भ में प्रमुख हैं तीन पवित्र नदियाँ- गंगा, यमुना और काल्पनिक सरस्वती। इनमें से पहली नदी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

चूँकि गंगा स्त्रीलिंग हैं, इसलिए उसे लंबे केशों वाली महिला के रूप में अंकित किया जाता है। देवी के रूप में गंगा उन सबके पाप धो देती है जो इतने भाग्यशाली हों कि उनकी भस्म उसके पवित्र जल में प्रवाहित की जाए। ब्रह्मवैवर्त पुराण में गंगा को संबोधित करने वाले एक पद में स्वयं शिव कहते हैं- पृथ्वी पर लाखों जन्म-जन्मान्तर के दौरान एक पापी जो पाप के पहाड़ जुटा लेता है, गंगा के एक पवित्र स्पर्श मात्र से लुप्त हो जाता है। जो भी व्यक्ति इस पवित्र जल से आर्द्र हवा में साँस भी ले लेगा, वह निष्कलंक हो जाएगा। विश्वास किया जाता है कि गंगा के दिव्य शरीर के स्पर्श मात्र से हर व्यक्ति पवित्र हो जाता है। भारतीय देवकथा में सर्वाधिक रंगीन कहानियाँ हैं उन परिस्थितियों के बारे में जिनमें गंगा स्वर्गलोक से उतरकर पृथ्वी पर आई थीं।

एक समय कुछ राक्षस थे जो ब्राह्मण ऋषि-मुनियों को तंग करते थे और उनके भजन-पूजा में बाधा डाला करते थे। जब उनका पीछा किया जाता था तो वे समुद्र में छिप जाते थे, मगर रात में फिर आकर सताया करते थे। एक बार ऋषियों ने ऋषि अगस्त्य से प्रार्थना की कि वे उनको राक्षसी प्रलोभन की यातना से मुक्त करें। उनकी सहायता के उद्देश्य से अगस्त्य ऋषि राक्षसों समेत समुद्र को पी गए। इस प्रकार उन राक्षसों का अंत हो गया किंतु पृथ्वी जल से शून्य हो गई। तब मनुष्यों ने एक और ऋषि भगीरथ से प्रार्थना की कि वे सूखे की विपदा से उन्हें छुटकारा दिलाएँ। इतना बड़ा वरदान पाने के योग्य बनने के लिए भगीरथ ने तपस्या करने में एक हजार वर्ष बिता दिए और फिर ब्रह्मा के पास गए और उनसे प्रार्थना की कि वे स्वर्गलोक की नदी गंगा को- जो आकाश की नक्षत्र धाराओं में से एक थी- पृथ्वी पर उतार दें। भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने यथाशक्ति प्रयत्न करने का वचन दिया और कहा कि वे इस मामले में शिव से सहायता माँगेंगे। उन्होंने समझाया कि अगर स्वर्गलोक की वह महान नदी अपने पूरे वेग और समस्त जल के भार के साथ पृथ्वी पर गिरी तो भूकंप आ जाएँगे और उसके फलस्वरूप बहुत विध्वंस होगा। अतः किसी को उसके गिरने का आघात सहकर उसका धक्का कम करना होगा और यह काम शिव के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता। भगीरथ उपवास और प्रार्थनाएँ करते रहे। समय आने पर शिव पसीजे। उन्होंने गंगा को अपनी धारा पृथ्वी पर गिराने दी और उसके आघात को कम करने के लिए उन्होंने पृथ्वी और आकाश के बीच अपना सिर रख दिया। स्वर्गलोक का जल तब उनके केशों से होकर हिमालय में बड़े सुचारु रूप से बहने लगा और वहाँ से भारतीय मैदानों में पहुँचा जहाँ वह समृद्धि, स्वर्गलोक के आशीर्वाद और पापों से मुक्ति लेकर आया।

कुछ आसान और
अचूक टोटके

समय की कमी और भागदोड़ से भरी जिंदगी ने आज इंसान को हेरान परेशान कर रखा है। यहां हम जिन टोटकों यानि कि युक्तियों को दे रहें हैं वे ऐसी ही अद्भुत और कारगर युक्तियां हैं। ये तुलसी रामायण के प्रामाणिक और शक्ति सम्पन्न अंस हैं। जिनको सूर्योदय से पूर्व पूर्ण शांत एवं पूर्ण एकांत स्थान पर मात्र 15 मिनिट मंत्र की तरह जपने से इच्छित मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है।

- धन-समृद्धि की वृद्धि के लिये - जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं, सुख सम्पति नाना विधि पावहिं ।
- मुकद्दमा जीतने के लिये - पवन तनय बल पवन समाना, बुद्धि विवेक विज्ञान निधाना ।
- पुत्र प्राप्ति के लिये - प्रेम मगन कोशल्या निशिदिनि जात न जान, पुत्र सनेह बस माता बालचरित कर गान ।

कौन थीं कृष्ण की 16108 रानियां ?

श्रीकृष्ण का नाम आते ही हमारे मन असीम प्रेम उमड़ता है। सभी जानते हैं कि असंख्य गोपियां थी जो श्रीकृष्ण से अनन्य प्रेम करती थीं। परंतु उनकी शादी श्रीकृष्ण से नहीं हो सकी। श्रीकृष्ण की प्रमुख पटरानी रुकमणी पटरानी रुकमणी सहित उनकी 8 पटरानियां एवं 16100 रानियां थीं। कुछ विद्वानों का यह मत है कि कृष्ण की प्रमुख रानियां तो आठ ही थीं, शेष 16,100 रानियां प्रतीकात्मक थीं। इन्हें वेदों की ऋचाएं माना गया है। ऐसा माना जाता है चारों वेदों में कुल एक लाख श्लोक हैं। इनमें से 80 हजार श्लोक यज्ञ के हैं, चार हजार श्लोक पराशक्तियों के हैं। शेष 16 हजार श्लोक ही गृहस्थों या आम लोगों के उपयोग के अर्थात भक्ति के हैं। इन श्लोकों को ऋचाएं कहा गया है, ये ऋचाएं ही भगवान कृष्ण की पत्नियां थीं। श्रीकृष्ण की प्रत्येक रानी से 10-10 पुत्र एवं प्रत्येक रानी से 1-1 पुत्री का जन्म हुआ।

क्या है कृष्ण की रासलीला का सच ?

कुछ लोग अपने आपको कृष्ण भक्त या कृष्ण के अनुयाई बताकर चेहरे पर बड़े गर्व के भाव व्यक्त करते हुए घूमते हैं। यदि उनसे पूछा जाए कि क्या है कृष्ण का मतलब ? क्या था कृष्ण का व्यक्तित्व, और क्या क हते हैं कृष्ण अपनी गीता में क्या रसिया कृष्ण की गीता में रासलीला का बड़ा ही सुन्दर वर्णन आया है इतना पूछने पर, अपने आप को कृष्ण का अनुयाई कहने वाले ये तथाकथित कृष्ण भक्त खिसियाकर बगलें झांकने लगते हैं।

वास्तविकता यह है कि रास शब्द रस से ही बना है। जबकि रस शब्द का अर्थ है आनंद। आगे चलकर हम देखते हैं कि संगीत के साथ किये जाने वाले नृत्य को ही काव्य अथवा साहित्य में रास संज्ञा से सूचित किया जाने लगा। पता नहीं रासलीला को लेकर समाज में यह गलत मान्यता कैसे प्रचलित हो गई। संस्कृत कवि जयदेव ने अपने काव्य में कृष्ण को नायक बनाकर कई श्रृंगारिक गीतों की रचना की जो कि पूरी तरह काल्पनिक एवं मनगढ़ंत हैं। जयदेव की परंपरा को ही बाद में विद्यापति....से लेकर सूरदास ने आगे बढ़ाया।

नौ वर्ष के कृष्ण- एक अति महत्वपूर्ण बात और भी है जिससे बहुत कम ही लोग परिचित हैं। वह यह है कि जब कृष्ण ने हमेशा-हमेशा के लिये गोकुल-वृंदावन छोड़ा तब उनकी उम्र मात्र नौ वर्ष की थी। इससे यह तो स्पष्ट ही है कि कृष्ण जब गोप-गोपिकाओं के साथ गौकुल-वृंदावन में थे तब नौ वर्ष से भी छोटे रहे होगें। अति मनोहर रूप, बांसुरी बजाने में अत्यंत निपुण, अवतारी आत्मा होने के कारण जन्मजात प्रतिभाशाली आदि तमाम बातों के कारण वे आसपास के पूरे क्षेत्र में अत्यंत् लोकप्रिय थे। नौ वर्ष के बालक का गोपियों के साथ नृत्य करना एक विशुद्ध प्रेम और आनंद का ही विषय हो सकता है। अत कृष्ण रास को शारीरिक धरातल पर लाकर उसमें मोजमस्ती या भोग विलास जेसा कुछ ढूंढना इंसान की स्यवं की फितरत पर निर्भर करता है। कृष्ण के प्रति कोई राय बनाने से पूर्व इंसान को गीता को समझना होगा क्योंकि उसके बिना कोई कृष्ण को वास्तविक रूप में समझ ही नहीं पाएगा।

ग्रामीण युवाओं के लिए सुनहरा मौका: आरसेटी में टैली, प्लंबिंग और कृषि उद्यमी प्रशिक्षण शुरू

नीमच। जिले के ग्रामीण युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से भारतीय स्टेट बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी), नीमच द्वारा विभिन्न निःशुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं। इच्छुक युवक-युवतियों के लिए पंजीयन प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। प्रवेश 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर दिया जाएगा।

संस्थान के अनुसार 9 जून से कंप्यूटर टैली तथा 10 जून से प्लंबिंग एंड सेनेटरी वर्क्स का 30 दिवसीय प्रशिक्षण शुरू होगा। इन प्रशिक्षणों में 18 से 50 वर्ष आयु वर्ग के ग्रामीण युवक-युवतियां भाग ले सकेंगे। प्रशिक्षण अवधि में प्रतिभागियों को आवास, भोजन एवं नाश्ता निःशुल्क उपलब्ध कराया जाएगा।

वहीं 6 जून से 13 दिवसीय कृषि उद्यमी प्रशिक्षण भी प्रारंभ होगा, जिसमें डेयरी फार्मिंग, वर्मी कम्पोस्ट एवं कृषि से संबंधित तकनीकी जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण के दौरान कृषि, उद्यानिकी एवं पशु चिकित्सा विभाग के विशेषज्ञ प्रतिभागियों को आधुनिक तकनीकों और स्वरोजगार के अवसरों की जानकारी देंगे।

आरसेटी प्रबंधन के अनुसार प्रशिक्षण के दौरान बैंकिंग सेवाओं और स्वरोजगार से जुड़े वित्तीय पहलुओं की भी जानकारी दी जाएगी। साथ ही प्रतिभागियों की बैंकिंग संबंधी समस्याओं का समाधान भी किया जाएगा।

संस्थान ने ग्रामीण युवाओं से इस अवसर का लाभ उठाकर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कदम बढ़ाने की अपील की है।

कार्यालय नगरपालिका परिषद, नीमच जिला नीमच (म.प्र.)

क्रं. 148/ई-टेण्ड./01/पथ-प्रकाश.वि./2026 — नीमच, दिनांक 02.06.2026

ऑनलाईन (Online) निविदा आमंत्रण सूचना

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीयकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाईट website http://mptenders.gov.in पर देख सकते है।

क्रं./टेण्डर क्रमांक	कार्य का नाम	कार्य की समयावधि एवं लागत	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं EMD	निविदा प्रपत्र की अंतिम तिथि
2026_UAD_512105	WORK FOR SANI MANDIR TO KARGIL SMART POLLL LIGHTING WORK	6 Months 23949702+GST	Rs. 15000 RS.119750	04.07.2026

1. निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन http://mptenders.gov.in की वेबसाईट पर ही किया जावेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

श्रीमती स्वाति गौरव चौपड़ा, अध्यक्ष, नगरपालिका परिषद, नीमच
मनोहर मोटवानी, सभापति, लो.नि.वि., नगरपालिका परिषद, नीमच
मुख्य नगरपालिका अधिकारी, नगरपालिका परिषद, नीमच

मानव अधिकार आयोग अध्यक्ष डॉ. अवधेश प्रताप सिंह 8 जून को नीमच में, अधिकारियों की बैठक के साथ जिला जेल का करेंगे निरीक्षण

नीमच | मध्य प्रदेश मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष डॉ. अवधेश प्रताप सिंह 8 जून को नीमच दौरे पर रहेंगे। संशोधित कार्यक्रम के अनुसार वे 7 जून को नाथद्वारा से रवाना होकर शाम 7 बजे नीमच सर्किट हाउस पहुंचेंगे, जहां रात्रि विश्राम करेंगे। 8 जून को सुबह 10 बजे वे स्थानीय कार्यक्रमों में भाग लेंगे। इसके बाद दोपहर 3 बजे कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, मुख्य नगरपालिका अधिकारी सहित जिले के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक करेंगे। बैठक के उपरांत दोपहर 3:30 बजे जिला जेल नीमच का निरीक्षण करेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार निरीक्षण के बाद शाम 4:30 बजे जावरा के लिए प्रस्थान करेंगे।

एमपी में कमर्शियल LPG सिलेंडर 44 तक महंगा

भोपाल। कमर्शियल LPG सिलेंडर की कीमतें आज से फिर बढ़ गई है। मध्य प्रदेश में यह 44 रुपए तक महंगा हुआ है। भोपाल में अब 3116.50 रुपए में सिलेंडर मिलेगा। वहीं, इंदौर में 3222.50 रुपए, जबलपुर में 3290 रुपए, ग्वालियर में 3338.50 रुपए और उज्जैन में 3250 रुपए कीमत हो गई है।

तीन महीने में रेट करीब 1300 रुपए तक बढ़े हैं। इससे पहले 1 मई को रेट बढ़े थे। सिलेंडर की कीमतें लगातार बढ़ने से खाना महंगा हो गया है। भोपाल में ही खाना 10 से 15 प्रतिशत तक महंगा हुआ है। जुलाई तक प्रदेश में 20 हजार से ज्यादा शादियां होनी हैं, ऐसे में आम लोगों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। भोपाल होटल एवं रेस्टोरेंट संघ के अध्यक्ष तेजकुल पाल सिंह पाली ने बताया कि कमर्शियल गैस सिलेंडर के रेट लगातार बढ़ रहे हैं। यह पहले की तुलना में 60 प्रतिशत तक महंगा हो गया है। इस कारण खाना भी महंगा हो रहा है। पिछली बढ़ोतरी के बाद 10 से 15 प्रतिशत तक रेट बढ़े थे। आगे और बढ़ने की संभावना है।

मध्य प्रदेश टेंट कैटर्स एसोसिएशन के रामबाबू शर्मा ने बताया, सिलेंडर के रेट बढ़ने से होटल और कैटर्स में 10 प्रतिशत तक कॉस्टिंग का फर्क पड़ा है। 500 लोगों के 5 लाख रुपए के खाने का बजट अब 45 से 50 हजार रुपए तक बढ़ चुका है। आगे भी ऐसे हालात बन सकते हैं।

रेस्टोरेंट में खाना भी महंगा – नेशनल रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (NRAI) के एमपी हेड अभिषेक बहेती ने बताया कि कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमतें हर महीने बढ़ रही हैं। तीन महीने में 4 बार कीमतें बढ़ चुकी है। इससे रेस्टोरेंट में खाने का रेट भी बढ़ा है। यह आम लोगों पर बोझ डाल रहा है।

एमपी में शुरू हुआ तबादलों का दौर

भोपाल। प्रदेश में तबादलों का दौर शुरू हो गया है। 15 जून तक सभी विभाग अपने यहां स्वैच्छिक और प्रशासनिक आधार पर अधिकारी, कर्मचारी के तबादले कर सकेंगे। उधर पीएचक्यू द्वारा 5 जून तक आरक्षक से एसआई तक के तबादले करने के निर्देश के बाद जिलों में एसपी और पुलिस आयुक्तों ने बदलाव शुरू कर दिया है। दूसरी ओर शिक्षा विभाग समेत कई अन्य विभागों ने एक जून तक जिलों में पदस्थ अफसरों के पूरी डिटेल मांगी है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन ने संविदा पर पदस्थ कर्मचारी अधिकारी से दो जून तक ऑनलाइन आवेदन करने को कहा है। मोहन कैबिनेट ने 20 मई की बैठक में तबादला नीति को मंजूरी दी थी। इसके बाद सामान्य प्रशासन विभाग ने 22 मई को वर्ष 2026 की तबादला नीति जारी कर दी है। नौ दिन के अंतराल में सभी विभागों को तबादले से संबंधित तैयारियां करने और विभागीय तबादला नीति जारी करने के निर्देश भी जीएडी ने दिए हैं। इसके बाद अब सोमवार से विभाग तबादला नीति के आधार पर स्थानांतरण आदेश जारी कर सकेंगे।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक ऐश्वर्य शर्मा के लिए माँ भगवती प्रिन्टर्स बंगला नं. 23, आईडीबीआई बैंक के सामने, नीमच, जिला-नीमच, मध्यप्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित। सम्पर्क: 9407423966। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नीमच होगा।